अप्रैल 2020 वर्ष : 3 अंक : 7

# सिफरी मासिक समाचार

# नील क्रांति की ओर अग्रसर

## निदेशक की कलम से

मानव जाति अपने ज्ञान प्रसार तथा सफलता की नई उचाईयों को प्राप्त करने के लिए सदैव से ही देश-विदेशों का भ्रमण करता रहा है। पर देश को वर्ष 2020 का पूर्वार्द्ध में ऐसे ही भ्रमण के कारण कोरोना संक्रमण अथवा कोविड-19 जैसे महामारी का प्रकोप को झेलना पड़ा है। हालांकि इस संक्रमण की शुरुआत चीन देश में हुई लेकिन अंतर्राष्ट्रीय भ्रमण के दौरान एक दूसरे के साथ संसर्ग से हमारे देश में भी इस महामारी ने प्रचंड रूप ले लिया है। पर हमारी सरकार के समयानुकूल उपायों के कारण यहाँ परिस्थिति नियंत्रण में देखी जा रही है। टाइटस मेक्सियस प्लौटस ने कहा था - "खतरे में हिम्मत रखना आधी लड़ाई जीतने जैसा है।" अर्थात इस महामारी के प्रकोप से केवल आत्म संयम और संकल्प से ही बचा जा सकता है।

संस्थान में अनुसंधान गतिविधियों में वर्ष 1998-2018 की मत्स्य पकड़ समयबद्ध आंकडों के अनुसार रिहंद जलाशय में कतला मछली की तुलना में कलबसु और रोहू की प्रचुरता अधिक हो गयी है। अपरद युक्त ईस्ट कोलकाता वेटलैंड के जल में घरेलू और सौंदर्य उत्पादों में उपस्थित रोगाणुरोधी यौगिकों जैसे ट्राईक्लोसन और ट्रिक्लोकार्बन के अवशेष पाये गए। कावेरी ज्वारनदमुख से चार नई प्रजातियां पायी गयी हैं। संस्थान ने संस्थान ने 74 वां स्थापना दिवस मनाया और अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का पालन किया। साथ ही, योग, ध्यान, प्राणायाम से भरपूर आर्ट ऑफ लिविंग के एक सत्र का आयोजन किया गया।

चूंकि इस महीने के अंत में कोरोना संक्रमण के कारण सम्पूर्ण लॉकडाउन था इसलिए कुछ बैठकें ऑनलाइन मोड अर्थात वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा आयोजित की गईं। इनमें प्रमुख थी- उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान) ,मत्स्य प्रभाग , भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा बुलाई गई बैठक ,भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित निदेशक सम्मेलन ;पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय के पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय ,पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी , "वैश्विक खतरे पर एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध : एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण ,"आदि।

विकेश दास

# संस्थान ने 74 वां स्थापना दिवस उत्सव

संस्थान ने दिनांक 17 मार्च 2020 को संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर कोलकाता में अपना 74वां स्थापना दिवस मनाया।

इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में डॉ॰ बि॰ के॰ दास, निदेशक सभी कर्मचारियों, प्रगतिशील मछली किसानों, मत्स्य उद्योगों, आदि को बधाई दी और कहा कि संस्थान ने अपने अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास के माध्यम से मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्रांति और भारत में मत्स्य पालन के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है। 1950-51 के बाद से देश में मछली के उत्पादन में 10 गुना वृद्धि करने में सक्षम बनाया है। डॉ॰ दास ने कहा कि इसकी स्थापना के बाद से संस्थान ने प्रेरित प्रजनन और मछली बीज

उत्पादन पर बहुत उपयोगी अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रौद्योगिकियां पैदा की हैं; समन्वित मछली पालन; नदियों में मछली बीज और स्पॉन संग्रह; जलाशय और बाढ़ आर्द्रभूमि मत्स्य पालन प्रबंधन और पिंजरे और पेन में मछली बीज उत्पादन में भी अपना छाप छोड़ा हैं। डॉ. यू. के. सरकार, विभागाध्यक्ष , जलाशय और आद्रक्षेत्र मात्स्यिकी विभाग ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान ने डॉ. अलीखुनी और डॉ. हीरालाल चौधरी के नेतृत्व में भारतीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान में प्रमुख कार्प के पिट्यूटरी ग्रंथि हार्मोन के इंजेक्शन से प्रेरित सफल प्रजनन कर युगांतरकारी सफलता को संभव बनाया। संस्थान ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के स्थायी प्रबंधन के

लिए प्रासंगिक दिशानिर्देश भी विकसित किए हैं। डॉ. जीवन मित्रा, भूतपूर्व निदेशक, आईसीएआर- क्राईजेफ, नीलगंज ने अपने संबोधन में आईसीएआर –सिफरी, बैरकपुर को 74 वें संस्थापना दिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि सिफरी खुले जल निकायों में पालन आधारित मत्स्य पालन को मत्स्य समाज हाथो हाथ ले रहा है।

डॉ॰ अशोक कुमार सक्सेना, भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष और गेस्ट ऑफ ऑनर ने अपने संबोधन में संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों को 74 वें स्थापना दिवस की बधाई दी। उन्होंने दूसरी हरित क्रांति के लिए किसानों में जागरूकता पैदा करने और मछली उत्पादन बढ़ाने के माध्यम से किसानों की आय दोगुनी करने के लिए वैज्ञानिकों को धन्यवाद दिया।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस की अध्यक्ष और समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. विजयलक्ष्मी सक्सेना ने अपने संबोधन में निदेशक और आईसीएआर-सीआईएफआरआई के सभी कर्मचारियों को इस महत्वपूर्ण अवसर पर बधाई दी। उन्होंने 3-7 जनवरी, 2021 को पुणे में आयोजित होने वाली 108 वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में सभी को आमंत्रित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि गंगा नदी में मछली की विविधता में सुधार के लिए मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास किया जाएगा।

इस अवसर पर दो प्रकाशनों "Eurihaline fishes of river Ganga" और हिंदी गृह पत्रिका "नीलांजलि" का विमोचन किया गया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ॰ ए॰ के॰ दास ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।**प्रगतिशील मछली किसानों ने आईसीएआर –सिफरी की मदद से अपनी उपलब्धि के बारे में सभा को संबोधित किया।** स्थापना दिवस समारोह में कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले 100 मछली किसानों ने भी भाग लिया। संस्थापना दिवस केक को माननीय गणमान्य व्यक्तियों द्वारा काटा गया। भव्य समारोह का समापन बैरकपुर घाट पर माननीय अतिथियों द्वारा गंगा नदी में भारतीय प्रमुख कार्प बीज की 50000 अग्रिम अंगुलियों को छोड़ा गया।

## मुख्य शोध उपलब्धियां

वर्ष 1998-2018 की मत्स्या पकड़ समयबद्ध आंकड़ें यह बताते हैं कि कतला मछली की तुलना में कलबसु और रोहू की प्रचुरता अधिक हो गयी है और इसका स्पष्ट उदाहरण है, रिहंद जलाशय। इस जलाशय में कतला मछली की संख्या अन्य प्रजातियों की तुलना में बहुत कम रह गई है।

अरुणाचल प्रदेश की सियांग नदी से मॉनसून पश्चात सैंपलिंग के दौरान कुल 41 प्रजातियाँ दर्ज की गई थीं, जिनमें बारिलीयस बरिला, ओपसरियस बारना, क्रॉसोकीलियस लेटीयस, बरिलियस बेन्डेलिसिस, एस्पिडोपारीआ मोरार, पुंटियस सोपोर की प्रचुरता अधिक पायी गई।

अपरद भोजी ईस्ट कोलकाता वेटलैंड के जल में घरेलू और सौंदर्य उत्पादों में उपस्थित रोगाणुरोधी यौगिकों जैसे ट्राईक्लोसन और ट्रिक्लोकार्बन के अवशेष की संदरता क्रमशः 0.039 और 0.508 *mg / ली.* पाया गया। कुछ मछलियों के नमूनों में ट्रिक्लोसन की सांद्रता 0.145 से 3.819 *mgkg* प्रति ली. पाई गई।

कावेरी ज्वारनदमुख से चार प्रजातियां अर्थात् मोनोडैक्टाइलस अरेंजेटस (सिल्वर मूनी), अकांथुरस जैनथोप्टेरस (येलो सर्जनफिश), ट्राइकीरस लेप्टुरस (लार्जहेड हेयरटेल) और सिगनसवर्मिसमैटस (वर्मीक्युलेटेड स्पाइनफुट) दर्ज की गईं जो एक नया रिकॉर्ड है।

गंगा बेसिन के उष्णकटिबंधीय बाढ़कृत की पारिस्थितिकी और मछली जैव विविधता पर पर्यावरण-जलवायु प्रभाव यह दिखाते हैं कि इन आद्रक्षेत्रों में मछली की विविधता में काफी गिरावट आई है, जो लगभग 22.85 से 54% दर्ज किया गया। कैनोनिकल कॉरस्पॉन्डेंस एनालिसिस (*CCA*) में मछलियों के साथ जलवायु और पर्यावरणीय मापदंडों के अलग-अलग संबंध दिखाई दिए, जो प्रजातियों को विशिष्ट अनुकूलन क्षमता को बताते हैं।

ग्रीष्म काल में नर्मदा नदी के मीठा जल विस्तार क्षेत्र, नरेश्वर से झानोर में हुक और लाइन जाल द्वारा मेक्रोब्रेकियम रोजेनबर्गी, चन्ना मेरुलियास, चन्ना पंकटेटस, नोटोप्टेरस नोटोप्टेरस और वलागो अट्टू को पकड़ा गया।

## महत्वपूर्ण बैठकें

संस्थान के निदेशक ने दिनांक 7 मार्च, 2020 को पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय के पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल दरवा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, "वैश्विक खतरे पर एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध: एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण" में भाग लिया तथा एक की-नोट प्रस्तुत किया।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 मार्च, 2020 को पंजाब, अमृतसर में गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, पंजाब के प्राणि विज्ञान विभाग, UGC- SAP कार्यक्रम में समीक्षा समिति के सदस्य के रूप में भाग लिया।

निदेशक और अन्य वैज्ञानिकों ने दिनांक 17 मार्च 2020 वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), मत्स्य प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा बुलाई गई बैठक में भाग लिया।

निदेशक और अन्य अधिकारियों ने 19 मार्च 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित निदेशक सम्मेलन में भाग लिया।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पालन

संस्थान में 7 मार्च, 2020 को अपने मुख्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया । इस वर्ष महिला दिवस के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा तय थीम "I am Generation Equality: Realizing Women's Rights" पर कार्यक्रम की संकल्पना की गयी थी। इस थीम के जरिये संयुक्त राष्ट्र महिलाओं की प्रत्येक पीढ़ी को जोड़ रहा है और वह यह सुनिश्चित करना चाह रहा है कि हर पीढ़ी की महिलाएं एक दूसरे को सशक्त करें। किशोरावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक एक पीढ़ी की समानता रहे और सभी एक दूसरे को संरक्षण देते हुए महिला

अधिकारों की वकालत करें और उन्हें संरक्षित करें। इस थीम का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर महिलाओं को सशक्त करना है जिसकी शुरुआत

वर्ष 1995 में बीजिंग, चीन के सम्मेलन में जेनरेशन इक्वेलिटी मुहिम से हुई थी।

समारोह का उदघाटन माननीय डॉ॰ बी॰ पी॰ मोहंती, सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और डॉ॰ बि॰ के॰ दास, माननीय निदेशक महोदय ने किया। निदेशक महोदय ने भारत के उज्जवल भविष्य के निर्माण में महिलाओं की

भूमिका को सराहते हुए, उपस्थित सभी महिलाओं को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस की सुभकामनाएँ दी। डॉ॰ बी॰ पी॰ मोहंती ने इस तथ्य

पर जोर दिया कि प्रगतिशील समाज में महिलाओं का योगदान निर्विवाद है और मात्स्यिकी क्षेत्र भी महिलाओं के प्रगति के साथ ही आगे बढ़ सकता है। इसके बाद महिला कर्मचारियों ने भी विचार साझा किए और उल्लेख किया कि कैसे संस्थान महिला कर्मचारियों के प्रति सदैव सहयोगी रहा है। इसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें नृत्य, गानों के साथ एक पॉवर पॉइंट प्रस्तुति के साथ नारीत्व और नारी शक्ति का चित्रण किया गया था। इस अवसर पर महिला कर्मचारियों द्वारा फूड कोर्ट का आयोजन किया गया। महिलाओं में एकरूपता को ध्यान रखते हुए इस वर्ष एक ड्रेस कोड तय किया गया जिसमें यह आग्रह किया गया कि सभी महिलाएं कर्मी नीले और हरे रंगो के संयोजन वाली परिधान पहनें। सभी महिला कर्मचारियों को थीम आधारित विशेष बैज दिये गए ।

## प्रशिक्षण

संस्थान ने दिनांक 28 फरवरी से 5 मार्च 2020 तक बिहार के मुंगेर जिले के किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन और विकास" पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 31 मत्स्य

कृषको ने भाग लिया।

## ओडिशा के मयूरभंज के मछुआरों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर प्रशिक्षण

संस्थान ने दिनांक 12-16 मार्च 2020 तक मयूरभंज जिले के मछली किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। ओडिशा के मयूरभंज जिले के 30 मछुआरों (14 महिलाओं और 16 पुरुषों) और 4 मत्स्य अधिकारियों ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम को आत्मा योजना, ओडिशा सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया।

मछुआरों के सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल को मजबूत करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। प्रशिक्षण में जलाशय और आर्द्रभूमि मत्स्य पालन, प्रजातियों के चयन, पिंजरे और कलम में मछली और बीज मछली उत्पादन, मछली फ़ीड तैयार करने, वित्तीय प्रबंधन, नर्सरी तालाब में बीज उगाने, पानी और मिट्टी मापदंडों प्रबंधन

आदि सहित खुले जल मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को शामिल

# संसदीय राजभाषा समिति का आगमन

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 26-28 फरवरी, 2020 तक वडोदरा के 21 कार्यालयों का राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति का निरीक्षण किया। इसी क्रम में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, वडोदरा का दिनांक 27 फरवरी, 2020 को राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति का निरीक्षण किया।

संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक माननीया प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, समिति के अन्य माननीय सदस्य – श्री प्रदीप टम्टा, श्री सुशील कुमार गुप्ता, श्रीमती रंजनबेन धनजय भटट तथा समिति सचिवालय के सचिव श्री बी. एल. मीना, श्री कमल स्वरूप, अनुसंधान अधिकारी एवं श्री किरन पाल, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक तीन दिवसीय दौरे पर वडोदरा आए।

संस्थान के निदेशक डा. बि. के. दास, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.), नई दिल्ली के प्रतिनिधि डा. प्रवीण कुमार, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.), नई दिल्ली के प्रतिनिधि श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा) तथा वडोदरा केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. एस. पी. काम्बले ने मिलकर माननीय समिति का स्वागत किया।

निरीक्षण बैठक दिनांक 27 फरवरी, 2020 को पूर्वाह्न शुरु की गई जिसमें संसदीय राजभाषा समिति की

दूसरी उपसमिति के गणमान्य सदस्यों के अतिरिक्त निरीक्षण कार्यालय की ओर से डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

(भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. प्रवीण कुमार, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि श्रीमती सीमा चोपड़ा (राजभाषा), श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. एस. पी. काम्बले, मोहम्मद कासिम, मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) तथा श्री वाकमबन आनन्द मितई, उपस्थित थे। बैठक के प्रारंभ में केन्द्र के प्रभारी अधिकारी ने उपस्थित भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के अधिकारियों तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधियों का परिचय करवाया।

निरीक्षण बैठक प्रारंभ होते ही संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक माननीया प्रो. रीता बहुगुणा जोशी ने बताया कि राजभाषा समिति देश में विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों का निरीक्षण कर इनमें हिंदी भाषा में हो रहे कार्यों का आंकलन कर अपनी रिपोर्ट बनाकर गृह मंत्री के समक्ष पेश करती है।

निरीक्षण के दौरान तैयार प्रश्नावली के आधार पर सवाल किए गए । समिति के सदस्यों ने हिंदी में कार्य करने संबंधी कमियों को सुधारने के निर्देश दिए। प्रस्तुत रिकार्ड संतोषजनक रहा। राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु केन्द्र द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर माननीय सदस्यों ने संतोष व्यक्त किया। जो थोड़ी गलतियां सामने आई, उन्हें सुधारने के निर्देश दिए।

निरीक्षण कार्यक्रम को देखते हुए वडोदरो केन्द्र द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्यों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई । संसदीय समिति के गणमान्य सदस्यों ने बड़ी ही उत्सुकता के साथ प्रदर्शित सामग्रियों को देखा तथा विभिन्न तकनीकी तथा प्रशासनिक प्रकाशनों के बारे में जानकारी ली। समिति के संयोजक माननीया प्रो. रीता बहुगुणा जोशी ने संस्थान की गृह पत्रिका नीलांजलि के प्रकाशन कार्यों की सराहना की।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि डा. प्रवीण कुमार, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी) ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

किया गया है। प्रशिक्षुओं को संस्थान के पुनरावर्ती जलीय कृषि प्रणाली और सजावटी मछली हैचरी इकाई से भी अवगत कराया गया। पेन में मछली पालन के व्यावहारिक प्रदर्शन और अपरद आधारित मत्स्य पालन

के लिए पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि के साथ बेलडांगा आर्द्रभूमि का अध्ययन दौरा भी आयोजित किया गया था।

संस्थान के निदेशक डॉ॰ बि॰ के॰ दास ने मयूरभंज के मछुआरों से अपील की कि वे इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम में मिले ज्ञान को अपने गाँव के अन्य मछुआरों के साथ-साथ जिले के अन्य मछुआरों के साथ भी साझा करें। इस कार्यक्रम से मछुआरों के समुदाय में आजीविका बढ़ाने और मछली उत्पादन की वृद्धि होने की उम्मीद है। प्रशिक्षण का समन्वय गणेश चंद्र और एच.एस. स्वैन द्वारा निदेशक महोदय की देखरेख में सम्पन्न हुआ।

## ओडिशा के अनुसूचित जनजाति मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण

संस्थान ने अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत ओडिशा के मछुआरों

के लिए 12-14 मार्च 2020 के दौरान तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ॰ बि॰ के॰ दास के मार्गदर्शन में संस्थान ओडिशा के सलिया जलाशय, बगुआ जलाशय और केशपुरा-पैगसीडा आर्द्रभूमि में अनुसूचित जनजाति उप-योजना (एससीएसपी) कार्यक्रम का संचालन कर रहा है। इस कार्यक्रम के तहत संस्थान द्वारा सलिया जलाशय, बागुआ जलाशय, नयागढ़ जिला और केशपुरा और पैगासीडा आर्द्रभूमि,

गंजम जिले के प्राथमिक मछुआरों सहकारी समिति को एचडीपीई पेन, नेट, सीड, फीड और नौका जैसे विभिन्न मत्स्य पालन उपकरण वितरित किए गए, जहां अधिकांश लाभार्थी अनुसूचित जनजाति के हैं। प्रशिक्षण में जलाशय और आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया, जिसमें आर्द्रभूमि और जलाशय में प्राकृतिक भोजन का महत्व, बीज उगाने के लिए केज और पेन कल्चर, जलाशय और आर्द्रभूमि में स्टॉकिंग, बाड़े की संस्कृति के लिए फ़ीड प्रबंधन, बीज प्रबंधन, नर्सरी तालाब, पानी और मिट्टी मापदंडों के प्रबंधन में वृद्धि आदि थे। प्रशिक्षण का समन्वयन डॉ॰ पी॰ के॰ परिदा, डॉ॰ लियानथुमलिया और श्री एच॰ एस॰ स्वैन ने किया। संस्थान के निदेशक डॉ॰ बि. के. दास की देखरेख में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के द्वारा ओडिशा के अनुसूचित जनजाति के मछुआरों को प्रशिक्षित किया गया।

## सुंदरवन में मछली पालन पर कोविड महामारी का प्रभाव

कोविड -19 का कारण हुये लॉकडाउन का दुष्प्रभाव मात्स्यिकी क्षेत्र पर भी पड़ा है। सुंदरबन जैसे स्थानों में इसके प्रभाव के अध्ययन के लिए संस्थान ने इसके गांवों और मछली बाजारों का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में यह देखा गया है कि यहाँ मछली व्यापार को लगभग 33 प्रतिशत की हानि हुई है। इंडियन मेजर कार्प और मीडियम कार्प प्रजातियों के मछलियों की कीमत में 1.25 गुणा की वृद्धि हुई है। इसका कारण है, ऐसे ज्वरनदमुख अंचल में अधिक मूल्य वाली प्रजातियों की उपलब्धता लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो गयी है, साथ ही उनकी आपूर्ति अधिक से अधिक शहरी क्षेत्रों में बड़े बाजारों में होने लगी है। यहाँ छोटी देशी मत्स्य प्रजातियों का मूल्य 25 से 50 प्रतिशत तक कम कर दिया गया है। इसी प्रकार अन्य प्रजातियों का मूल्य भी विपणन सुविधाओं की कमी के कारण घटा दी गयी है।

वर्तमान में सुंदरबन क्षेत्र में मछली पकड़ने के लिए केवल 10 प्रतिशत नाव ही सक्रिय हैं, और वह भी केवल आधे मछुआरों के साथ और मछली पकड़ने की अवधि केवल एक-तिहाई कर दी गयी है। यहाँ के मछुआरों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे, मछलियों के विपणन में कमी, मछलियों को अन्य बाज़ारों में ले जाने के लिए स्थानीय स्तर पर बर्फ उपलब्ध नहीं है और इसलिए उन्हे सस्ते मूल्य पर स्थानीय बाजार में मछली बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

## संस्थान में आर्ट ऑफ लिविंग का सत्र आयोजन

आज की भागदौड़ और तनाव भरे जीवन में शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक संबल भी बनाए रखने की अत्यंत आवश्यकता है। इस क्रम में निदेशक महोदय के मार्गदर्शन में संस्थान कर्मियों के लिए आध्यात्म गुरु श्री श्री रविशंकर जी की 'आर्ट ऑफ लिविंग' संस्था द्वारा निर्देशित एक तीन-दिवसीय सत्र आयोजन किया गया। दिनांक 6 से 8 मार्च 2020 को आयोजित इस सत्र में संस्थान के 14 लोगों ने भाग लिया। यह सत्र

इस संस्था की मास्टर ट्रेनर, श्रीमति पुष्पा साहू की देख-रेख में सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम योग, ध्यान, प्राणायाम से भरपूर एक ऐसा पैकेज है जो प्रशिक्षणार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायता करता है।

## श्रद्धांजलि

संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र में नियुक्त सहायक वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, श्री सीता राम मीणा का दिनांक 20 मार्च 2020 को असामयिक निधन हो गया। स्वर्गीय मीणा जी ने 4, दिसम्बर 1995 को संस्थान के नदीय प्रभाग, प्रयागराज में अपना योगदान पुस्तकालय सहायक के पद से देना प्रारम्भ किया था । मार्च 2017 से अगस्त, 2018 तक श्री मीना जी मुख्यालय बैरकपुर पर भी कार्यरत थे। संस्थान के पुस्तकालय एवं सूचना प्रबंधन कार्यों में उनका योगदान बहुत अधिक रहा है। संस्थान की ओर से दिवंगत मीणा को विनम्र श्रद्धांजलि।

## सम्पादक मंडल की तरफ से

सम्पादन मण्डल इस कोरोना महामारी में आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है। इस महामारी का सामना हम सभी को हिम्मत से करना है साथ ही हम स्वयं और अपने परिवार को सुरक्षित और स्वस्थ रख सकें।

धन्यवाद,

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

**भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था,**(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है